10

राम का भरत को संदेश

रचनाकार/कवि का परिचय : नामः तुलसीदास, जन्म : 1497 ई. मृत्यु : 1623 ई., प्रमुख कृतियाँ– रामचरितमानस, विनय पत्रिका, कवितावली, गीतावली, दोहावली।

अधिगम प्रतिफल :

- अपने परिवेश में मौजूद लोक कथाओं और लोकगीतों के बारे में बताते/सुनाते हैं।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं। जैसे– मुखिया का कर्तव्य।
- कविता (दोहा–चौपाई) को पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं और लिखते हैं।

पाठ का परिचय – तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस के अयोध्याकांड से यह अंश उद्धृत है। यह दोहा एवं चौपाई छंद में रचित है। राम जब वनवास करने लगते हैं तो राजकाज की जिम्मेदारी भरत को मिलती है। भरत राजा बनने के लिए तैयार नहीं होते और श्रेष्ठ जनों के साथ श्री राम को मनाकर अयोध्या वापस लाने के लिए जाते हैं। राम नीतियों से बंधे हैं और आने से मना कर देते हैं लेकिन भरत के आग्रह पर कुछ शिक्षा देते हैं और पानी चरणपादुका (खराऊँ) देते हैं। भरत इन्हें पाकर अत्यंत प्रसन्न होते हैं और राम के उत्तरदायित्वों का निर्वहान सेवक की भांति करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

सार–संक्षेप

अपने पिता दशरथ की आज्ञा से पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ श्रीराम वनवास कर रहे हैं। उनके छोटे भाई भरत अपने गुरु वसिष्ठ, मुनिगण, राजा जनक तथा अन्य परिजनों के साथ अयोध्या लौटने के लिए मनाने गए। मगर श्रीराम वनवास की अवधि पूरी होने से पहले लौटने को तैयार नहीं हुए। तब भरत उनसे कुछ सीख देने की विनती करते हैं जिससे वे श्रीराम की अनुपस्थिति में अपना उत्तरदायित्व भली–भांति पूरा कर सकें।

© JCERT not to be republished

तुलसीदास रचित 'रामचरितमानस' के अयोध्याकाण्ड से लिए गए इस पद्य में श्रीराम भरत से कहते हैं कि जब तक हमारे गुरु, मुनि और राजा जनक हमारे साथ हैं तब तक हमें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वे ही हमारी रक्षा करेंगे। बड़ों की आज्ञा पालन करने से हमारा पतन नहीं होता। गुरुजनों की आज्ञा के अनुसार ही राजधर्म का पालन करना।

वे कहते हैं कि किसी मुखिया को मुख के समान होना चाहिए जो खाता–पीता तो अकेला है परंतु शारीर के सभी अंगों का समान रूप से पालन–पोषण करता है।

श्रीराम ने भरत के आग्रह पर अपना खड़ाऊँ प्रेमपूर्वक उन्हें सौंप दिया। भरत ने खड़ाऊँ को अपने माथे से लगा लिया। भरत के लिए ये खड़ाऊँ मानो उनकी प्रजा की रक्षा के लिए दो पहरेदार के सामान हैं उनके प्रेमरूपी रत्न को सहेजकर रखनेवाला सीप है, जाप करने के लिए रामनाम के दो अक्षर हैं, रघुकुल की रक्षा करने के लिए दो किवाड़हैं तथा सेवारूपी धर्म की राह दिखानेवाले दो नेत्र हैं। भरत खड़ाऊँ के रूप में ऐसा सहारा पाकर बहुत आनंदित हुए। उन्हें महसूस हुआ जैसे श्रीराम और सीता ही उनके साथ हैं।

गद्यांश की व्याख्या

दोहाः

दीनबंधु सुनि बंधु के वचन दीन छलहीन।
देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन।।

शब्दार्थ –

दीनबंधु – दीन के बंधु

छलहीन – छल से रहित

बंधु – भाई

सरिस– अनुकूल

© JCERT not to be republished

भावार्थ –

दीनबंधु एवं प्रवीण श्री राम, भाई भरत के दीन और छलरहित वचन सुनकर देश, काल और अवसर के अनुकूल वचन बोलो।

चौपाई:

तात तुम्हारी मोरी परिजन की। चिंता गुरहि नृपहि घर बन की।।
माथे पर गुर मुनि मिथिलेसू। हमहि तुम्हहि सपनेहुँ न कलेसू।।

शब्दार्थ –

तात – आदरणीय व्यक्ति

नृपहि – राज काज

गुर – गुरु

मिथिलेस – मिथिला के राजा जनक

कलेसू – क्लेश

भावार्थ –

हे तात! तुम्हारी, मेरी, परिवार की, घर की और वन की सारी चिंता गुरु वशिष्ठजी और महाराज जनकजी को है। हमारे सिर पर जब गुरुजी, मुनि विश्वामित्रजी और मिथिलापति जनकजी हैं, तब हमें और तुम्हें स्वप्न में भी क्लेश नहीं है।

मोर तुम्हार परम पुरुषारथु। स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु।।
पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई। लोक बेद भल भूप भलाई।।

शब्दार्थ –

सिख – शिक्षा

अस – ऐसा

कुमग – कुमार्ग

अवधि – समय

© JCERT not to be republished

भावार्थ –

गुरु, पिता, माता और स्वामी की शिक्षा (आज्ञा) का पालन करने से कुमार्ग पर भी चलने पर पैर गड्ढे में नहीं पड़ता (पतन नहीं होता)। ऐसा विचार कर सब सोच छोड़कर अवध जाकर अवधि भर उसका पालन करो।

देसु कोसु परिजन परिवारू। गुर पद रजहिं लाग छरुभारू।।
तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी। पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी।।

भावार्थ –

देश, खजाना, कुटुम्ब, परिवार आदि सबकी जिम्मेदारी तो गुरुजी की चरण रज पर है। तुम तो मुनि वशिष्ठजी, माताओं और मन्त्रियों की शिक्षा मानकर तदनुसार पृथ्वी, प्रजा और राजधानी का पालन (रक्षा) भर करते रहना।

प्रश्न–

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :–

क. देस काल अवसर .... बोले रामु प्रबीन।।

ख. तात तुम्हारि मोरि .... की। चिंता गुरहि नृपहि घर बन की।।

ग. पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई। लोक बेद भल .... भलाई।

घ. अस बिचारि सब सोच बिहाई। पालहु अवध .... भरि जाई।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10–20 शब्दों में दें।

क. भरत के वचन सुनकर श्री राम किसके अनुकूल वचन बोले?

ख. किनकी आज्ञा का पालन करने से व्यक्ति का पतन नहीं होता?

ग. राम ने भरत से किसका पालन करने के लिए कहा है?

3. भावार्थ लिखें–

मोर तुम्हार परम पुरुषारथु। स्वारथु सुजसु धरमु परमारथु।।
पितु आयसु पालिहिं दुहु भाई। लोक बेद भल भूप भलाई।।

© JCERT not to be republished

दोहाः

मुखिआ मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक।
पालइ पोषइ सकल अँग तुलसी सहित बिबेक।।

शब्दार्थ–

मुखिआ – मुखिया

पालइ – पालने

पोषइ – पोषण करना

बिबेक – विवेक

भावार्थ –

तुलसीदासजी कहते हैं – (श्री रामजी ने कहा–) मुखिया मुख के समान होना चाहिए, जो खाने–पीने को तो एक (अकेला) है, परन्तु विवेकपूर्वक सब अंगों का पालन–पोषण करता है।

चौपाईः

राजधरम सरबसु एतनोई। जिमि मन माहँ मनोरथ गोई।।
बंधु प्रबोधु कीन्ह बहु भाँती। बिनु अधार मन तोषु न साँती।।

शब्दार्थ–

राजधरम – राजधर्म

गोई – छुपा

तोष – संतोष

एतनोई – इतना ही

सरबसु – सर्वस्व

जिमि – जैसे

प्रबोधु – समझाया

साँती – शांति

© JCERT not to be republished

भावार्थ

राजधर्म का सर्वस्व (सार) भी इतना ही है। जैसे मन के भीतर मनोरथ छिपा रहता है या सदैव विद्यमान रहता है वैसे ही राजा भी कभी अपने राजधर्म से अलग नहीं रह सकता। श्री रघुनाथजी ने भाई भरत को बहुत प्रकार से समझाया, परन्तु कोई अवलम्बन पाए बिना उनके मन में न संतोष हुआ, न शान्ति।

भरत सील गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू।।
प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।।

शब्दार्थ–

सील – शील (प्रेम)

पाँवरी – खड़ाऊँ

सीस – शीश

धरि – धारण

भावार्थ

इधर तो भरतजी का शील (प्रेम) और उधर गुरुजनों, मंत्रियों तथा समाज की उपस्थिति! यह देखकर श्री रघुनाथजी संकोच तथा स्नेह के विशेष वशीभूत हो गए (अर्थात भरतजी के प्रेमवश उन्हें पाँवरी देना चाहते हैं, किन्तु साथ ही गुरु आदि का संकोच भी होता है।) आखिर (भरतजी के प्रेमवश) प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने कृपा कर खड़ाऊँ दे दीं और भरतजी ने उन्हें आदरपूर्वक सिर पर धारण कर लिया।

चरनपीठ करुनानिधान के। जनु जुग जामिक प्रजा प्रान के।।
संपुट भरत सनेह रतन के। आखर जुग जनु जीव जतन के।।

शब्दार्थ–

करुणानिधान

जामिक – पहरेदार

संपुट – पिटारी, संदूक

आखर – अक्षर

© JCERT not to be republished

भावार्थ –

करुणानिधान श्री रामचंद्रजी के दोनों खड़ाऊँ प्रजा के प्राणों की रक्षा के लिए मानो दो पहरेदार हैं। भरतजी के प्रेमरूपी रत्न के लिए मानो डिब्बा है और जीव के साधन के लिए मानो राम–नाम के दो अक्षर हैं।

कुल कपाट कर कुसल करम के। बिमल नयन सेवा सुधरम के।।
भरत मुदित अवलंब लहे तें। अस सुख जस सिय रामु रहे तें।।

शब्दार्थ–

कपाट – दरवाजा

बिमल – विमल, निर्मल

मुदित – प्रसन्न

अवलंब – सहारा

अस – ऐसा

भावार्थ–

रघुकुल (की रक्षा) के लिए दो किवाड़ हैं। कुशल (श्रेष्ठ) कर्म करने के लिए दो हाथ की भाँति (सहायक) हैं और सेवा रूपी श्रेष्ठ धर्म के सुझाने के लिए निर्मल नेत्र हैं। भरतजी इस अवलंब के मिल जाने से परम आनंदित हैं। उन्हें ऐसा ही सुख हुआ, जैसा श्री सीता–रामजी के रहने से होता है।

प्रश्न –

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें –

क. .... मुखु सो चाहिऐ खान पान कहुँ एक।

ख. प्रभु करि कृपा .... दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।

ग. भरत मुदित अवलंब लहे तें। अस सुख जस सिय .... रहे तें।

© JCERT not to be republished

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 10–20 शब्दों में दें।

क. मुखिया की क्या विशेषता होनी चाहिए?

ख. राम के समझाने पर भी भरत को संतोष क्यों नहीं हुआ?

ग. श्री राम के खड़ाऊँ को भरत ने किन उपमानों में देखा है?

6. आशय स्पष्ट करें –

भरत सील गुर सचिव समाजू। सकुच सनेह बिबस रघुराजू।।
प्रभु करि कृपा पाँवरीं दीन्हीं। सादर भरत सीस धरि लीन्हीं।।

बहुवैकल्पिक प्रश्न

7. राम का भरत को संदेश कविता कहाँ से ली गई है?

क. रामायण

ख. रामचरितमानस

ग. राम की शक्तिपूजा

घ. रामकथा

8. राम का भरत को संदेश कविता के रचयिता कौन हैं?

क. कबीरदास

ख. मीराबाई

ग. बिहारी

घ. तुलसीदास

9. राम का भरत को संदेशश कविता किस भाषा में रचित है?

क. ब्रजभाषा

ख. अवधी

© JCERT not to be republished

ग. खड़ीबोली

घ. संस्कृत

10. राम का भरत को संदेश कविता किस छंद में रचित है?

क. दोहा, सोरठा

ख. दोहा, सवैया

ग. दोहा, चौपाई

घ. दोहा, घनाक्षरी

11. मुखिया किसके समान होना चाहिए?

क. आँख

ख. नाक

ग. कान

घ. मुँह

12. राम को अयोध्या लौटने के लिए मनाने भरत किनके साथ वन गए?

क. गुरु वशिष्ठ

ख. मुनिगण

ग. राजा जनक एवं अन्य परिजन

घ. उपरोक्त सभी

13. जब तक हमारे गुरु, मुनि और राजा जनक हमारे साथ हैं, तब तक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है "यह कथन किनका है?

क. राम

ख. कौशल्या

ग. भरत

घ. गुरु वशिष्ठ

© JCERT not to be republished

14. भरत ने खड़ाऊँ को किस प्रकार स्वीकार किया?

क. प्रजा की रक्षा करने वाला पहरेदार

ख. प्रेमरूपी रत्न को सहेजकर रखनेवाले सीप

ग. जाप करने के लिए रामनाम के दो अक्षर

घ. उपरोक्त सभी

15. रघुकुल की रक्षा करने के लिए दो किवाड़ तथा सेवारूपी धर्म की राह दिखाने वाले दो नेत्र किन्हें कहा गया है?

क. राम

ख. भरत

ग. खड़ाऊँ

घ. वन

16. 'राम का भरत को संदेश' रामचरितमानस के किस कांड से लिया गया है?

क. अरण्यकांड

ख. सुंदरकांड

ग. बालकांड

घ. अयोध्याकांड

पाठ्यपुस्तक से प्रश्नोत्तर

प्र.1. : इस पाठ में श्रीराम ने किसे समझाने का प्रयास किया है?

उत्तर : इस पाठ में श्रीराम ने अपने छोटे भाई भरत को समझाने का प्रयास किया है।

प्र. 2. : राम ने भरत को क्या–क्या करने की सलाह दी?

उत्तर : राम ने भरत को सलाह दी कि जब तक हमारे गुरु, मुनि और राजा जनक हमारे साथ हैं तब तक चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। वे ही रक्षा करेंगे। बड़ों की आज्ञा का पालन करते रहने से पतन नहीं होता। गुरुजनों की आज्ञा के अनुसार ही राजधर्म का पालन करना चाहिए।

© JCERT not to be republished

प्र. 3. : तुलसीदास जी के अनुसार मुखिया को कैसा होना चाहिए?

उत्तर : तुलसीदास जी के अनुसार मुखिया को मुख के समान होना चाहिए, जो खाता–पीता तो अकेला है परंतु शरीर के सभी अंगों का समान रूप से पालन–पोषण करता है।

प्र.4. : पाठ के अनुसार राजधर्म क्या है?

उत्तर : अपने राज्य की प्रजा, परिजन एवं परिवार के सुख–दुख का ध्यान रखकर न्यायपूर्वक शासन करना ही राजधर्म है।

प्र. 5. : राम ने भरत को क्या भेंट किया तथा भरत ने उसे किस प्रकार स्वीकार किया?

उत्तर : राम ने भरत को अपनी चरण पादुका अर्थात खड़ाऊँ भेंट की। भरत ने खड़ाऊँ को प्रजा की रक्षा करनेवाले दो पहरेदार, प्रेमरूपी रत्न को सहेज कर रखनेवाले सीप, जाप करने के लिए रामनाम के दो अक्षर, रघुकुल की रक्षा करने के लिए दो किवाड़ तथा सेवारूपी धर्म की राह दिखानेवाले दो नेत्र की तरह स्वीकार किया।

प्र.6. : निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें–

क. अस बिचारि सब सोच बिहाई।

पालहु अवध अवधि भरि जाई।।

ख. तुम्ह मुनि मातु सचिव सिख मानी।

पालेहु पुहुमि प्रजा रजधानी।।

उत्तर :

क. : प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा राम ने भरत को सीख देते हुए कहा कि – गुरु, पिता, माता और स्वामी की शिक्षा (आज्ञा)का पालन करने से कुमार्ग पर भी चलने पर पैर गड्ढे में नहीं पड़ता (पतन नहीं होता)। ऐसा विचार कर सब सोच छोड़कर अवध जाकर अवधिभर अर्थात वनवास की अवधि भर उसका पालन करो।

ख. : प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से श्रीराम ने भरत को अयोध्या के राज्य भार की जिम्मेदारी हेतु मानसिक रूप से तैयार होने की सीख दी है। श्रीराम ने भरत से कहा कि देश, खजाना, कुटुंब, परिवार आदि सबकी जिम्मेदारी तो गुरु वशिष्ठजी की चरण–रज पर है। तुम तो मुनि वशिष्ठ जी, माताओं और मंत्रियों की शिक्षा के अनुसार पृथ्वी, प्रजा और राजधानी का सिर्फ पालन और रक्षा करना।

© JCERT not to be republished

भाषा–संदर्भ

प्रश्न. : "देस काल अवसर सरिस बोले रामु प्रबीन।"

यह पंक्ति अवधी भाषा की है जिसमें 'देस' और 'प्रबीन' शब्द आए हैं। हिंदी में इनका रूप है – देश और प्रवीण।

इस पाठ से अवधी भाषा के शब्दों को चुनकर उनके सामने समान अर्थ देने वाले हिंदी के प्रचलित शब्दों को लिखिए –

अवधी	:	खड़ी बोली (हिंदी)
वचन	:	वचन
....		....
....		....

उत्तर –

अवधी	:	खड़ी बोली (हिंदी)
कलेसू	:	क्लेश
आयसु	:	आज्ञा
कुमग	:	कुमार्ग
कोषु	:	कोश
सरबसु	:	सर्वस्व
एतनोई	:	इतना ही
सांति	:	शांति
अस	:	ऐसा

© JCERT not to be republished

पद्यांश के प्रश्नोत्तर

1 .क. सरिस ख. परिजन ग. भूप घ. अवधि

2. क. भरत के वचन सुनकर श्री राम देश, काल और अवसर के अनुकूल वचन बोले।

ख. गुरु, पिता, माता और स्वामी की शिक्षा (आज्ञा) का पालन करने व्यक्ति का पतन नहीं होता।

ग. राम ने भरत से पृथ्वी, प्रजा और राजधानी का पालन करने के लिए कहा है।

3. : मेरा और तुम्हारा तो परम पुरुषार्थ, स्वार्थ, सुयश, धर्म और परमार्थ इसी में है कि हम दोनों भाई पिताजी की आज्ञा का पालन करें। राजा की भलाई (उनके व्रत की रक्षा) से ही लोक और वेद दोनों में भला है।

उत्तर–

4. क. मुखिआ ख. पाँवरीं ग. रामु

5. क. मुखिया मुख के समान होना चाहिए, जो खाने–पीने को तो एक (अकेला) है, परन्तु विवेकपूर्वक सब अंगों का पालन–पोषण करता है।

ख. भरत राम का कोई अवलम्बन या निशानी चाहते थे जिसे प्रतिस्थापित कर वे अपने को उनका सेवक समझ कर कार्य कर पाएँ। इसलिए राम के समझाने पर भी भरत के मन में संतोष नहीं हुआ।

ग. श्री राम के खड़ाऊँ को भरत ने निम्नलिखित उपमानों में देखा है –

i. प्रजा के प्राणों की रक्षा के लिए मानो दो पहरेदार

ii. भरतजी के प्रेमरूपी रत्न के लिए मानो डिब्बा

iii. जीव के साधन के लिए मानो राम–नाम के दो अक्षर

iv. रघुकुल (की रक्षा) के लिए दो किवाड़

v. कुशल (श्रेष्ठ) कर्म करने के लिए दो हाथ की भाँति

vi. सेवा रूपी श्रेष्ठ धर्म के सुझाने के लिए निर्मल नेत्र

6. : इधर तो भरतजी का शील (प्रेम) और उधर गुरुजनों, मंत्रियों तथा समाज की उपस्थिति! यह

© JCERT not to be republished

देखकर श्री रघुनाथजी संकोच तथा स्नेह के विशेष वशीभूत हो गए (अर्थात भरतजी के प्रेमवश उन्हें पाँवरी देना चाहते हैं, किन्तु साथ ही गुरु आदि का संकोच भी होता है।) आखिर (भरतजी के प्रेमवश) प्रभु श्री रामचन्द्रजी ने कृपा कर खड़ाऊँ दे दीं और भरतजी ने उन्हें आदरपूर्वक सिर पर धारण कर लिया।

बहुवैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर

7. ख. रामचरितमानस

8. ख. अवधी

9. घ. मुँह

10. क. राम

11. ग. खड़ाऊँ

12. घ. तुलसीदास

13. ग. दोहा, चौपाई

14. घ. उपरोक्त सभी

15. घ. उपरोक्त सभी

16. घ. अयोध्याकांड

© JCERT not to be republished